NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

कद्दू की खेती के उन्नति तरीके

*श्वेता वर्मा, शेफाली चौधरी, डॉ. आस्तिक झा

परिचय:

कद्दू की खेती लगभग पूरे भारत में होती है। कद्दू एक ऐसी सब्जी है जिसेके क्षेत्र और राज्य के अनुसार नाम होते हैं। अगर हम उत्तर प्रदेश की बात करते हैं तो कद्दू को काशीफल, सीताफल, कोला या कई जगह इसे पैठे की सब्जी भी बोला जाता है Iइसके हरे फलो से सब्जी तथा पके हुए फलो से सब्जी और मिठाई भी बनाई जाती है। कद्दू के बीज से तेल भी निकाला जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है। कद्दू के फल में विटामिन A, C, और फाइबर भरपूर मात्रा में होते हैं।

आमदनी सरकार किसानों कि आय दोगुनी करने पर कार्य कर रही है, इसके लिए वो किसानों को नए-नए तरीके से फसल करना, खेती सम्बंधित व्यवसाय करना आदि कि ट्रेनिंग दे रही है |

कद्दू कि खेती भी किसानों के लिए एक वरदान का काम कर सकती है | इसकी उपज में लागत कम आती है तथा इसका उत्पादन अच्छा होता है | इसके फल का वजन भी ज्यादा होता है | पके कददू गहरे पीले रंग के होते हैं तथा इसमें कैरोटीन की मात्रा भी बहुतायत में पाई जाती है।

इसमें कैरोटीन की मात्रा भी अधिक पाई जाती है। इसके फल, फूल तथा पत्तों का भी सब्जी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसके सर्वाधिक उत्पादन वाले राज्य हैं- असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा तथा उत्तर प्रदेश। कम लागत, अच्छी

खेत की तैयारी:

सामान्यतः अन्य फसलों की तरह इसकी खेती के लिए भी खेत में पोषक तत्वों की मात्रा भरपूर होनी चाहिए. खेत में पहली जुताई से पहले गोबर की बनी (सड़ी) हुई खाद डाल कर उसपर 2 से 3 बार कल्टीवेटर

***श्वेता वर्मा** शोध छात्रा, (सब्जी विज्ञान विभाग)
शेफाली चौधरी शोध छात्रा, (सब्जी विज्ञान विभाग)
डॉ. आस्तिक झा (एसोसिएट प्रोफ़ेसर)
उद्यान विज्ञान विभाग
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

से जुताई लगा दें और ऊपर से पाटा लगा दें जिससे की खेत समतल हो जाये. अगर हो सके तो अपने खेत को कम से कम 3 साल में एक बार हरी खाद जरूर दें।

भूमि का चुनाव:

इसकी फसल के लिए भूमि का चुनाव करते समय ध्यान रहे की उस खेत में पानी निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए | यानि की इसकी जमीन में पानी नहीं रुकना चाहिए इससे इसके पौधे और फल दोनों ही गलने लग जाते हैं. इसके खेती के लिए दोमट एवम बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है। जिसका पी एच मान 5.5 से 6.8 पी एच हो, मध्यम अम्लीय भूमि में भी इसे उगाया जा सकता है। इसके लिए अधिक जुताइयों की आवश्यकता नहीं है, 2 बार कल्टीवेटर चलाकर पाटा लगाना पर्याप्त है।

जलवायु:

कद्दू की खेती के लिए शीतोषण और समशीतोषण जलवायु दोनों उपयुक्त है।इसके लिए उपयुक्त तापमान 18 से 30 डिग्री सेंटीग्रेट है। .इसके बीज को उगाने के लिए दोनों मौसम सहायक होते हैं लेकिन सर्दी के मौसम में इसके बीज को उगाना मुश्किल है | लेकिन आज तो लोग कृत्रिम मौसम देकर इसके बीज को समय से पहले ही उगा लेते हैं |

उन्नत किस्मे :

1. **श्रीराम किंगकांग-** अवधि 100 से 110 दिन यह 100 से 110 दिन में तैयार होने वाली किस्म है । इसके फल का वजन 8 से 9 किलोग्राम होता है। इसके फल हरे और पीले रंग के होते है
2. **PPH 2-** अवधि 90 से 100 दिन यह ज्यादा जल्दी पकने वाली किस्म है । इसकी बेलें छोटे कद की, छोटे पोर वाली और गहरे हरे रंग के पत्ते होते हैं। इसके फल छोटे और गोल आकार में होते हैं। अपरिपक्व अवस्था में इसके फल हल्के हरे रंग के और पकने की अवस्था में नर्म भूरे रंग के हो जाते हैं। फल का गुद्दा सुनहरे पीले रंग का होता इसकी औसतन पैदावार 222 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।
3. **पूसा विश्वास-** अवधि 120 से 125 दिन इस किस्म के फल हल्के भूरे रंग के और गोल आकार के होते हैं। गूदा मोटा एवं पीले रंग का होता है । इसके फलों को पकने में 120-125 दिन का समय लगता है । इसकी औसत उपज 120 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।
4. **प्रजातियाँ:-** पूसा विकास, कल्यानपुर पम्पकिन- 1, नरेन्द्र अमृत, अर्का सुर्यामुखी, अर्का चन्दन, अम्बली, सी एस- 14, सी ओ- 1 एवम 2, पूसा हाईब्रिड- 1 तथा कासी हरित कददू कुछ प्रमुख प्रजातियाँ है।
5. **विदेशी किस्में:-** पैटीपान, बतर न्ट, ग्रीन हब्बर्ड, गोल्डन हब्बर्ड, गोल्डन कस्टर्ड, और यलो स्टेट नेक।

बीज उपचार:

हाइब्रिड बीज पहले से उपचारित आते है इनकी सीधी बुवाई की जा सकती है। अगर घर पर तैयार किया हुआ या देसी बीज की बुवाई करते है तो इसे कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम + थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित कर ले।

बुआई का समय:-

बुआई का समय इसे उगाया जाने वाले स्थान पर निर्भर करता है। मैदानी क्षेत्रों में इसे साल में दो बार(फ़रवरी-मार्च, जून-जुलाई) तथा पर्वतीय क्षेत्रों में इसकी बुआई मार्च-अप्रैल में की जाती है। नदियों के किनारे इसकी बुआई दिसंबर में की की जाती है।

बीज की मात्रा:- प्रति हेक्टेयर 7-8 किलो ग्राम बीज पर्याप्त है।

बीज बोने का तरीका:

बीज को मेंड़ बना कर लगाना उचित रहता है. इसकी मेंड़ से मेंड़ कि दूरी कम से कम 4 फ़ीट की होनी चाहिए. जिससे की इसकी बेल को फैलने के लिए पूरी जगह मिल सके. उचित होगा अगर आप इसकी बेल को ऊपर चढ़ा दें जिससे की मिटटी की वजह से इसके फल को नुकसान नहीं होता है I

खाद एवं उर्वरक:

1. **आर्गनिक खाद:-** कद्दू की फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए उसमे उचित मात्रा में कम्पोस्ट खाद का डाला जाना बहुत जरुरी है। इसके लिए लगभग 40-50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर गोबर की सड़ी हुई खाद, 20 किलो ग्राम नीम की खली और 30 किलो अरंडी की खली को अच्छी तरह मिलाकर खेत में आखरी जुताई दें।फसल के 20-25 दिन के हो जाने पर उसमे नीम का काढ़ा और गौमूत्र मिलाकर मिश्रण तैयार कर फसल में 15-20 दिनों के अंतराल पर तर-बतर कर छिडकाव करें।
2. **रासायनिक खाद:-** 250 से 300 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद आखरी जुताई के साथ खेत में मिला दे। इसके साथ 80 किलोग्राम नत्रजन, 80 किलोग्राम फास्फोरस तथा 40 किलोग्राम पोटाश तत्व के रूप में दे।

सिंचाई:-

जायद में कद्दू को 7 दिनों में सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है वहीं बरसात(खरीफ़) में इसके लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। ग्रीष्म कालीन फसल के लिए नमी न होने पर 8-10 दिन के अंतर पर सिचाई करना चाहिए।

कीट एवं रोग नियंत्रण के जैविक तरीके:

लालड़ी

पौधों पर दो पत्तियां निकलने पर इस कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है यह कीट पत्तियों और फूलों को खाता है इस कीट की सुंडी भूमि के अन्दर पौधों की जड़ों को काटती है जिससे हमारी फसल का पौधा सूख जाता है जिसका नुक्सान हमे उठाना पड़ता है जिससे हमारी पैदावार पर काफी प्रभाव पड़ता है |

रोकथाम

इम से कम 40-50 दिन पुराना 15 लीटर गोमूत्र को तांबे के बर्तन में रखकर 5 किलोग्राम धतूरे की पत्तियों एवं तने के साथ उबालें 7.5 लीटर गोमूत्र शेष रहने पर इसे आग से उतार कर ठंडा करें एवं छान लें मिश्रण तैयार कर 3 ली. को प्रति पम्प के द्वारा फसल में तर-बतर कर छिडकाव करना चाहिए |

फल की मक्खी

यह मक्खी फलों में प्रवेश कर जाती है और वहीँ पर अंडे देती है अण्डों से सुंडी बाहर निकलती है वह फल को बेकार कर देती है यह मक्खी विशेष रूप से खरीफ वाली फसल को अधिक हानी पहुंचाती है जिससे हमारी फसल ख़राब हो जाती है | इसकी मक्खी फल के रस को चूस लेती है| इसको रस चूसक भी बोला जाता है |

रोकथाम

इम से कम 40-50 दिन पुराना 15 लीटर गोमूत्र को तांबे के बर्तन में रखकर 5 किलोग्राम धतूरे की पत्तियों एवं तने के साथ उबालें 7.5 लीटर गोमूत्र शेष रहने पर इसे आग से उतार कर ठंडा करें एवं छान लें मिश्रण तैयार कर 3 ली. को प्रति पम्प के द्वारा फसल में तर-बतर कर छिडकाव करना चाहिए |

सफ़ेद ग्रब

यह कीट कद्दू वर्गीय पौधों को काफी क्षति पहुंचाती है यह भूमि के अन्दर रहती है और पौधों की जड़ों को खा जाती है जिसके कारण पौधे सुख जाते है |

रोकथाम- इसकी रोकथाम के लिए खेत में नीम का खाद प्रयोग करें |

तुड़ाई:- कद्दू के फलो की तुड़ाई मांग पर निर्भर है। अमूमन बोने के 80-90 दिन बाद हरे फल तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते है।

उपज:- सामान्यतः प्रति हेक्टर उपज 250 से 300 कुंतल होती है।

NEW ERA
AGRICULTURE MAGAZINE